बिष्णु प्रसाद गौतम

ई—मेल-bishnugautamhtd@gmail.com

चिंता

पिताजी डाँटते हुए बोले, "बेटा, इतना रात हो गयी है, तुम अभी तक मोबाइल में ही लटक रहे हो ? घड़ी देखो तो रात के बारह बज चुके हैं।"

"पिताजी, आप भी रोज मेरे पीछे क्यों पड़ते हो? यह इक्कीसवीं शताब्दी है। तकनीक का युग है। अब हम मोबाइल से कैसे अलग हो सकते हैं?"

"देखो बेटा! प्रिन्सिपल ने तुम्हारे बारे में मुझे बहुत शिकायत की हैं। तुम्हारा रिजल्ट बहुत नाजुक आ रहा है। मुख्य चार विषयों में बहुत बुरा मार्क है। प्रिन्सिपल बोल रहें हैं—अगर आप अपने बेटे को सुधारने में सहमत हैं और बेटे का उज्ज्वल भविष्य देखना चाहते हैं तो आज से ही मोबाइल निषेध कर दीजिए। अगर नहीं, तो मैं मजबूर होकर स्कूल से उसका नाम काट दूँगा।"

आज हर बच्चे में पठन संस्कृति का लोप हो रहा है। सुबह से रात देर तक मोबाइल में ही पड़े रहते हैं, यह कैसा ज़माना आ गया। घर में किसी से बातचीत भी नहीं होती है। कोई किसी से मतलब ही नहीं रखता है। रिश्तेदार और मानवीय सम्बन्ध में भी बहुत बड़ी दरार पड़ रही है। हर व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार हो रहा है।—पिताजी बेटे को समझाते हुए बड़बड़ा रहे थे।

"सुनिए पिताजी!" बेटा पिताजी की तरफ देखकर बोला—"अगर मैं आप की बात स्वीकार कर लूँ तो मेरी भी एक शर्त है; क्या आप को मंजूर है?"

"तुम्हारी क्या शर्त है, बताओ?"

"मेरी शर्त यह है कि आज से आप भी मोबाइल से दूर रहिए!"

पिताजी निरुत्तर होकर पीछे मुड़ गए।

हिन्दी अनुवाद : किशन पौडेल

नेपाल के हेटौंडा निवासी बिष्णु प्रसाद गौतम । शिक्षण पेशा से सेवानिवृत्त है । लघुकथा, मुक्तक, कविता नियात्रा लिखते हैं। यह स्वतन्त्र लघुकथा है ।